रात्रि क्लास 24/9/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

साहबज़ादे और साहबज़ादियाँ साहब से मिलने आते हैं। बच्चे यह जानते हैं कि बेहद के बाप से वरसा पाना है। और पढ़ाई से ही पाना है। तो बच्चों का जैसे कि नया जीवन है। अज्ञान काल में हरेक को अपना अपना बाप, टीचर, गुरु होता है। यहाँ बाप भी सभी का एक, टीचर भी एक, गुरु भी एक ही है। एक को ही सबका कल्याण करना है। यह नई बात है ना। यह कब शास्त्रों में गाया हुआ नहीं है। बाप एक ही, शिक्षा देने वाला भी एक ही है। बेहद की बात है ना। शिक्षा भी बेहद की मिलती है। बेहद की सृष्टि के आदि, मध्य, अन्त की नॉलेज मिलती है। बेहद का गुरु भी है। पुरानी दुनिया का सन्यास कराते हैं; क्योंकि फिर नई दुनिया का मालिक बनना है। मीठे2 बच्चे जानते हैं हम खुद ही अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हैं। बाप ने समझाया है शास्त्र सभी हैं भक्तिमार्ग के। बाप बच्चों को सृष्टि के आदि,मध्य,अन्त का राज़ समझाते हैं। इस पुरानी दुनिया को भूल जाना है। अभी चलो अपनी नई दुनिया में। वह फिर स्थापन हो रही है। नई बात तो है नहीं। नई सो पुरानी पुरानी सो नई होती ही है। मनुष्य बिचारे चाहते हैं विश्व में शान्ति हो। विश्व में शान्ति का राज्य चाहिए यह भी समझते नहीं हैं। अभी तुम बच्चे समझते हो विश्व में शान्ति तो थी। अभी अशान्ति है। शान्ति सतयुग में होती है। यह बच्चों को समझाना होता है। बाप ने आबू की महिमा बहुत ही बताई है। यह सबसे बड़े ते बड़ा तीर्थ है। आबू जैसा ऊँच ते ऊँच बड़े ते बड़ा तीर्थ कोई है नहीं। सो भी सभी धर्मों का तीर्थ यह आबू है। तुम बच्चे सारे विश्व में शान्ति स्थापन करते हो। बाप भी यहाँ ही है। सभी की दिल लेनेवाला बाप है ना। मुक्ति–जीवनमुक्ति भी चाहते हैं। उनका नाम ही है दिल लेने वाला। दिलवाला मंदिर भी है। यह है चैतन्य, वह है जड़। अभी फिर बाप आकर सभी के दिलों की आस पूरी करते हैं। तो यह आबू का स्थान कितना बड़ा तीर्थ है। इस आबू की महिमा जोर से उठावेंगे तो बहुत नाम होगा। ल0ना0 की राजधानी में विश्व में शान्ति थी। सतयुग का यादगार दिलवाला मंदिर में भी बहुत अच्छा छत में बना हुआ है। यह भी एक मॉडल है। स्वर्ग तो बड़ा नहीं बन सकता है। जो पास्ट हो गया है वह मॉडल रूप में दिखाया गया है। तो बताओ विश्व में शान्ति यहाँ ही थी। यह बहुत अच्छी चीज़ है। तो टूयरेस्ट जो आते हैं वह अच्छी रीति समझेंगे। भारत का प्राचीन राजयोग का क्लीयर है। यह चैतन्य वह जड़। यह वन्डर है ना जहाँ बाप ने आकर सर्व की सद्गति की है। बेहद का बाप कोई तकलीफ नहीं देते हैं। बच्चों को कहते हैं देखो देवताएँ पवित्र थे। तुम भी पावन बनो। दैवीगुण धारण करो। मनुष्य आशीर्वाद देते हैं ना आयुष्मान भव, पुत्रवान भव। बाप तो कहते हैं तुमको 21 जन्म लिए आशीर्वाद मिल जाती है। बेहद का बाप है ना सारे विश्व की बादशाही दे देते हैं। समझानी बहुत सहज है। बाकी जन्म–जन्मान्तर के पाप कटने में टाइम लगता है। नॉलेज तो बहुत ही सहज है। 84 के चक्र की। बाकी याद की यात्रा में टाइम लगता है। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। पवित्र भी बनना है। ध्यान देना है। बाप बच्चों को समझाते हैं बड़ा ध्यान से सुनना है। यहाँ शास्त्र आदि कोई है नहीं न कोई साधु–सन्त–महात्मा हैं। और सभी जगह कहेंगे महात्मा पास जाते हैं। यहाँ महात्मा नहीं। कहेंगे हम बाप दादा पास जाते हैं। दोनों क्यों मिलाते हो। बाप है शिव, दादा है उस शिवबाबा रथ। बाप आते ही हैं रथ में। बाप कहते हैं मैं इस साधारण रथ में आता हूँ। यह अपने जन्मों को नहीं जानते हैं। अभी बाप ने समझाया है यह वही ल0ना0 है जो पुनर्जन्म लेते2 यह बनते हैं। यह है अन्तिम जन्म। इसने बेहद का सन्यास किया है। तो नाम रख दिया है ब्रह्मा। तुम सभी को भी नाम दिया था। बच्चों को यह समझाना पड़ता है। विष्णु और ब्रह्मा का क्या कनेक्शन है। ब्रह्मा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रह्मा। एक ही जन्म में ब्रह्मा सो विष्णु बनते हैं। फिर विष्णु 84 जन्म लेते2 फिर आकर ब्रह्मा बनते हैं। यही फिर ल0ना0 कहो राधे कृष्ण कहो, बनते हैं। नई बात है ना। यह शास्त्रों में भी नहीं है। भगवान ने गीता सुनाई उसमें तो यह बातें है ही नहीं। यह फिर कहाँ से आये हैं जो नई बात सुनाते हैं। तुम हो भी बरोबर नये फरिश्ते। बाप तुमको मनुष्य से देवता बनाने लिए फरिश्ता बनाते हैं। कर्मातीत अवस्था को तुम पाते हो तो फरिश्ता बन फिर देवता बनते हो। तुम जानते हो हम

सतयुग का देवी–देवता बनने आते हैं। वहाँ है अपरम्अपार सुख। यहाँ है अपरम्अपार दुख। हम जब कीड़े तो पता न था, गंद में पड़े थे। अभी बाप ने बताया है तुम कीड़े गंद में पड़े थे। विषयसागर में गोता खाने में तुमको मज़ा आता था। निकलते ही नहीं हो। आधा कल्प 63 जन्म निवास हुआ है वैश्यालय में तो शिवालय में जाने विख को छोड़ते ही नहीं हो। बाप कहते हैं सिर्फ यह अन्तिम जन्म पवित्र बनो। फिर यह वैश्यालय रहना न है। तो बच्चों को समझाते हैं ऐसा पवित्र देवता बनो। दिलवाला मंदिर में फिर ल0ना0 के राजधानी का यादगार। यह तो सिर्फ ल0ना0 हैं। दिलवाला मंदिर में सारी राजधानी है। बनाने वालों को भी पता नहीं है। वह भी आकर समझेंगे। हूबहू एक्युरेट यादगार है। नीचे तपस्या में आदिदेव आदिदेवी बैठे हैं। कमाल है भक्तिमार्ग वालों की जो ऐसे फर्स्ट क्लास छत बनाये हैं स्वर्ग की। कारीगरी का अच्छा काम है। इनका सारे वर्ल्ड को मालूम पड़ता है। यह सभी धर्मों का बड़े ते बड़ा तीर्थ है। अभी तो पता नहीं है गीता कब, कहाँ, किसने सुनाई। कुछ भी पता नहीं। मैदान दिखाया है। मैदान में ज्ञान दिया है। यहाँ तो मैदान की बात ही नहीं। यह तो पढ़ाई है ना। लाखों वर्ष का तो कोई मंदिर वा यादगार हो न सके। अच्छी मेहनत से बनाया हुआ है। यहाँ बच्चे आये हैं। जीते जी मरे हैं। वही बाप टीचर बन समझाते हैं। फिर सुप्रीम गुरु बन साथ में ले जाते हैं। समझना समझाना है और याद की यात्रा से कर्मातीत अवस्था को पाने का पुरुषार्थ करना है। बहुत स्वीटेस्ट बाप है। यह कोई कड़ी दवाई नहीं देते हैं। बाप बहुत मीठा है। फिर भी माया का वार बहुतों को हो जाता है। बाप के पास आते हैं बाप कहते हैं जीते रहो मीठे बच्चों। कल माया जीत न ले। अपनी जांच करनी है हम गुलाब के फूल बने हैं। कोई विकारों की बदबूएँ तो नहीं हैं। हम खुशबुएँदार हैं। औरों को भी खुशबुएँदार बनाने का रास्ता बताते हैं। बेहद के बाप से वरसा हर 5000 वर्ष बाद मिलता है। आकर नर्कवासियों को स्वर्ग वासी बनाता हूँ। मैं हर 5000 वर्ष बाद एक्युरेट रीति आता हूँ। अभी सभी दुख दूर होने वाले हैं। अपार दुख हैं। बाप आते हैं 21 जन्मों लिए सुखधाम का मालिक बनाने तो श्रीमत पर चलना चाहिए ना। बाप कहते हैं दैवीगुण धारण करो। मेरे को याद करते2 तुम्हारे पाप कट जावेंगे। शिवबाबा को याद करो जन्म–जन्मान्तर के पाप तो कटे। बाकी इस जन्म का आगे चलकर देखा जावेगा। बाप युक्ति तो बहुत अच्छा बतलाते रहते हैं। अच्छा मीठे2 बच्चों को रूहानी बापदादा का यादप्यार गुडनाइट और नमस्ते।